शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर की धम्मक्रांति का तत्वज्ञान

डॉ. मनीष मेश्राम
सहायक प्राध्यापक
स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज एंड सिविलाइज़ेशन
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
एक्सप्रेस वे, ग्रेटर नोएडा,
उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. आंबेडकरजी की १२५वीं जन्म जयंती सम्पूर्ण भारत देश में एवं विश्व में आनन्द से मनाई जा रही है। वे एक महान देशभक्त एवं सामाजिक क्रांतिकारी थे। वह देश के सुख व कल्याण के लिए राजनीतिक परिवर्तन से अधिक महत्व सामाजिक परिवर्तन को देते थे। उनका मानना था यदि सामाजिक बुराइयों को दूर न किया गया और हिन्दू धर्म के नाम पर चल रही असमानतमूलक तथा अन्यायपरक व्यवस्थायों को समाप्त न किया गया तथा पशुओं का सा जीवन जी रहे बहुजनों को समानता का दर्जा न दिया गया तो स्वाधीनता मिल जाने से भी देश का भला न हो सकेगा। इस सामाजिक असमानता को मूल से नष्ट करने के लिये उन्होंने नागपुर में 14 ओक्टोबर, 1956 को अशोक विजयदशमी के दिन 5 लाख लोगों के साथ बौद्ध धम्म को स्वीकार किया था। इसे बाबासाहेब की धम्मक्रांति कहते हैं। इस क्रांति का उद्देश्य है स्वयं के मन को परिवर्तित करते हुए सामाजिक मन को परिवर्तित करना। इसीलिए मुझे लगता है कि बाबासाहेब के 125वीं जन्म जयंती के दिन सिर्फ आनंदित होकर उनके जीवन व कार्य का स्मरण व गुण-गण करना पर्याप्त नहीं है , बल्कि, उन्होंने स्थापित धम्मक्रांति के मूलभूत तत्व और उनके परिणामों का चिंतन व प्रेरणा का दिवस है। तत्वों व परिणामों का चिंतन-मनन करने से ही बाबासाहेब के जन्म जयंती की सफलता होगी। क्योंकि बाबासाहेब एक आधुनिक बोधिसत्व थे। जिसने बहुजनों के हित व कल्याण के लिये अपने स्वयं के जीवन को समर्पित किया। उनके सच्चे शिष्यों को भी बुद्ध की मूलभूत शिक्षाओं को अपने जीवन में आचरण करते हुए बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार करने के मानवकल्याणकारी संकल्प करना चाहिये।

बाबा साहेब बोधिसत्व क्यों और कैसे ?

बीसवीं शताब्दी के विश्व के महापुरुषों में बाबासाहेब एक विशेष महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने अध्यवसाय से भारतीय इतिहास में ही नहीं अपितु विश्व के इतिहास में भी अपना स्थान बना लिया है। उनके लिये यह ठीक ही कहा गया था कि संसार में यदि कोई व्यक्ति है जो ज्ञान के शिखर पर पहुँच चुका है, तो वह डॉ. आंबेडकर हैं। वे ऊपर से कठोर लगते थे किन्तु अन्दर से कारुणिक तथा मृदुता की खान थे। डॉ. आंबेडकर को प्राय: 'बोधिसत्व आंबेडकर' कहा जाता है। बोधिसत्व दो शब्दों से मिलकर बना है। 'बोधि' और 'सत्व'। बोधि का अर्थ है सम्यक या बुद्धत्व। और सत्व का अर्थ जीवित व्यक्ति , प्राणी चेतन तथा बुद्धिमान व्यक्ति। इस प्रकार 'बोधिसत्व का अर्थ वह व्यक्ति है जिसका मन , चित्त , अभिप्राय, विचार अथवा इच्छा 'बोधि' पर केन्द्रित हो। जो व्यक्ति बोधि में अनुरक्त है। बोधिसत्व वह व्यक्ति है जिसकी शक्ति तथा बल बोधि की ओर उन्मुख हो। अतीव विचारणीय और महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि 'बोधिसत्व' श्रमण परम्परा का आदर्श है। और विशेष रूप से बौद्ध धम्म, साहित्य और बौद्ध जगत का।

बौद्ध साहित्य में 'बोधिसत्व साधारण प्राणी नहीं है, बल्कि वह वीर पुरुष या आध्यात्मिक योद्धा' है जिसमें अस्तित्व तथा संघर्ष दोनों ही भावों का समावेश हो। पाली साहित्य में बोधिसत्व शब्द का

प्रयोग 'भावी बुद्ध ' के लिये किया गया है। "उल्लेखनीय है कि शाक्यमुनी बुद्ध ने , बुद्ध होने के पूर्व अनेक जन्मों , तक बोधिसत्व रूप में सद्गुणों और पारमिताओं का पालन करने का प्रयास किया था , जिनका वर्णन जातक कथाओं में प्राप्त होता है। बिना परिश्रम के संबोधि प्राप्त नहीं हो सकती। बोधिसत्व का अर्थ है कि व्यक्ति जो बोधि या ज्ञान प्राप्त करने के मार्ग में स्थित हो, किन्तु जिसके चित्त में महाकरुणा का उदय हो गया हो और उस करुणा के कारण , वह न केवल अपने लिये , वरन और सब प्राणियों के लिये भी , दुख निवृत्ति (निर्वाण) कि अभिलाषा करता हो।

यह सही है कि बोधिसत्व बौद्ध धम्म कि उत्कृष्ठ अवधारणा है। यह मनुष्य समाज के लिये ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण प्राणी समाज कि रक्षा और कल्याण के लिये अपने को समर्पित कर देने की अवस्था है।

बोधिसत्व के इन उपर्युक्त विशेषताओं के आलोक में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन और कार्यो को देखना चाहिये। वे बचपन से ही चिंतनशील और संवेदनशील थे। उनकी बोधिसत्वीय संवेदना और कथनी तथा करनी में एकरूपता है। महाड़ के मीठे पानी के चावदार सरोवर में पानी पीने के लिये आंदोलन हो अथवा नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश के लिये आंदोलन हो , वे बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के लिये सदैव संघर्षरत रहे। संविधान संरचना मानो बोधिसत्वीय गुणों की परीक्षा ही थी। आज भी विश्व के राष्ट्र भारतीय संविधान का लोहा मानते हैं और विशेष आदर प्रदान करते हैं। निर्भीकता बोधिसत्व का एक विशेष गुण है। वे निडरता की मूर्ति ही थे। वे कहते थे कि, मैं वीर सैनिक का वीर बेटा हूँ। सेना की अगली कतार में रहकर लड़ना मुझे पसंद है ताकि मनुष्य समाज कि रक्षा कर सकूँ। उनके बोधिसत्व गुणों (शील, दान, वीर्य, शान्ति, ध्यान, प्रज्ञा) और लोकोपकारी कार्यों पर सम्यक विचारोपरांत बर्मा में 1956 ई. में सम्पन्न विश्व बौद्ध भ्रातृत्व सम्मेलन में भिक्षुसंघ ने उन्हें बोधिसत्व रूप से संबोधित किया था। उनका सम्पूर्ण जीवन बोधिचित्त प्रेरित होने से वे बोधिसत्व ही है।

बाबासाहेब की धम्मक्रांति के मूलभूत तत्व एवं परिणाम:

अपना भारत देश अगणित प्रकार की विषमताओंसे भरा हुआ है। एक नये समाज का गठन कैसे किया जाय ? यह एक अत्यंत चिंतनीय प्रश्न हम सब के सामने है। खास कर जब हमने 21वीं सदी में पदार्पण किया है और अन्य विश्व के साथ कंधे से कंधा मिलाने का सपना देख रहे हैं। यह समस्या और अधिक चिन्तन का विषय है बनी है। बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर इस दिशा में आज से 59 साल पहले अपना कदम अग्रसर किया था , तब उन्होंने अपने लाखों अनुयायियों के साथ बुद्धधम्म स्वीकार किया था। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के पश्चात, जिस सविधान का निर्माण किया, उसे देश को अर्पित करते वक्त स्पष्ट रूपसे चेताव नी दी थी कि अगर हम केवल राजकीय समता को प्राप्त करके स्वस्थ रह जाएँ और जल्द से जल्द हमारे समाज में उपस्थित सामाजिक और आर्थिक विषमता नष्ट कर पाए, तो हमारा यह राजकीय प्रजातन्त्र कामयाब नहीं हो सकता। विषमता के शिकार हुए लोग इसे जल्द ही उखाड़कर फेंकें बगैर नहीं रहेंगे। अतएव स्वतन्त्रता, समता, बंधुता तथा न्याय इन चार सूत्रों पर आधारित नये समाज का निर्माण करने हेतु उन्होंने बुद्धधम्म के आदर्श का स्वीकार किया। इसीलिए उनके धर्मांतर को विश्व में 'धम्म-क्रान्ति' कहते हैं।

बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर ने हिन्दू धर्म का परीत्याग क्यों किया ?

हम सभी जानते हैं कि वे एक अस्पृश्य परिवार में जन्मे थे। इसीलिए उन्हें अपने व्यक्तिगत कटु तथा भयंकर अनुभव से यह मालूम था कि सवर्ण हिन्दुओं द्वारा अछूतों से कैसा व्यवहार किया जाता है। उन्होंने यह भी देखा था कि केवल

उनका उदाहरण ही अद्वितीय नहीं था वरन सम्पूर्ण भारत में लाखों लोगों से उसी प्रकार अमानवीय तरीके से व्यवहार किया जा रहा था। अनेक वर्षों तक डॉ. आंबेडकर ने सवर्ण हिन्दुओं के हृदय परिवर्तन का प्रयास किया ताकि वे अपना रवैया बदले और व्यवहार-तरीकों में सुधार करें। किन्तु उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। अंत में वे इस परिणाम पर पहुंचे कि , कम से कम व्यवहार में तो सही , हिन्दू धर्म तथा अस्पृश्यता अभिन्न है। और यदि अछूतपन के अभिशाप से मुक्त होना चाहे- जाति व्यवस्था के दानव से अपने को मुक्त करना चाहे- तो उसे हिन्दुत्व का पूर्ण रूप से त्याग करना होगा। इसीलिए 13 अक्टोबर, 1935 में उन्होंने यह घोषणा की, 'यद्यपि मैं हिन्दू होकर पैदा हुआ हूँ , किन्तु हिन्दू रहकर नहीं मरूँगा। ' संक्षेप में यही कारण है की जिसकी वजह से बाबा साहेब ने हिन्दू धर्म का त्याग किया। उन्होंने देखा कि हिन्दुत्व की परिधि में अछूत होकर जन्मनेवालों के लिए मनुष्य के समान जीवन जीना असंभव है। अर्थात वह वह सभ्यता और सन्मान के साथ जी नहीं सकता।

बाबा साहेब ने बौद्ध धम्म ही क्यों पसंद किया ?

1 तथागत बुद्ध यह मार्गदाता है, मोक्षदाता नहीं

बाबा साहेब के अनुसार इस समय विश्व में चार ऐसे धर्म है , जिन्होंने न केवल अतीत में ही विश्व को आंदोलित किया वरन अभी भी उनका जनता के बहुत भारी हिस्से पर अच्छा खासा प्रभाव है। ये चार धर्म हैं: बौद्ध , ईसाई, इस्लाम और हिन्दू धर्म जिनके संस्थापक क्रमश: तथागत बुद्ध, ईसा मसीह , मुहम्मद और कृष्ण हैं। बाबा साहेब बुद्ध के संबंध में कहते हैं। वे कहते हैं कि बुद्ध ने, जिसने अपने मानवीय प्रयास से उच्चतम नैतिक, तथा परम पूर्ण बुद्धत्व के मन की अवस्था को प्राप्त किया , खुद को मनुष्य घोषित करने के अतिरिक्त और कोई दावा नहीं किया। उनके अनुसार ईसा, मुहम्मद, और कृष्ण सभी ने 'मोक्षदाता' होने का , याने मनुष्य को मुक्ति देने का या उसके लिए मुक्ति लाने का दावा किया। किन्तु बुद्ध ने केवल 'मार्गदाता' होने का अर्थात मुक्ति (निर्वाण) का पथ प्रदर्शक होने का दावा किया, जिस पथ पर अपने प्रयत्नों से चलकर हर इन्सान निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए बौद्ध धम्म को हम मानवीय धम्म कहते हैं। यह ऐसा धम्म है, जो मनुष्य को महत्व देता है। वह ईश्वर को महत्व नहीं देता। वस्तुत: वह ईश्वर को कोई स्थान नहीं देता। बुद्ध धम्म में मनुष्य को ही स्थान है। यही कारण है बाबा साहेब ने अन्य धर्म को त्याग कर सिर्फ बौद्ध धम्म को ही पसंद किया है। उन्होंने इसे इसलिये चुना क्योंकि यह एक मानवीय, अनीश्वरवादी धर्म है। बौद्धधर्म का ईश्वर से कोई भी संबंध नहीं है। बौद्ध धर्म के अनुसार ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। बुद्ध ने कहा है कि हम स्वयं अपने लिये उनके शब्दों कि परीक्षा करें। उन्होंने कहा कि हम उनके उपदेशों के सत्य को अपने अनुभव कि अग्नि में तपाकर देखें। जिस प्रकार एक सुनार सोने की परीक्षा करता है , उसी प्रकार उन्हे उनके उपदेशों की परीक्षा करनी चाहिये। और बुद्ध के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त करनी चाहिये। बुद्धत्व प्राप्त करने के लिये स्वयं प्रयास करना और बुद्ध के अनुभव को मार्ग स्वरूप स्वीकार करना ही उन्हें मार्गदाता मानना है।

बौद्ध धम्म नैतिकता (शील) पर आधारित है

समाज को अपनी एकता को बनाए रखने के लिये या तो कानून का बंधन स्वीकारना पड़ेगा या फिर नैतिकता का। दोनों के अभाव में समाज निश्चय ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। सभी प्रकार के समाज में कानून की भूमिका अत्यल्प होती है। उसका उद्देश्य होता है (कानून तोड़नेवाले) अल्पसंख्यकों को सामाजिक अनुशासन की सीमा में रख ना। बहुसंख्यकों को मात्र अपना सामाजिक जीवन बिताने के लिये नैतिकता के प्रामाण्य और अधिकार पर छोड़ दिया जाता है , न ही छोड़ना पड़ता है। इसीलिए धर्म को नैतिकता के अर्थ में प्रत्येक समाज के अनुशासन का तत्व बने रहना चाहिये।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

बौद्ध धम्म विज्ञान संगत है।

धर्म की उपर्युक्त परिभाषा विज्ञान के अनुकूल होनी चाहिये। यदि धर्म विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है तो वह अपने महत्व को खो कर हंसी और मज़ाक का विषय बन सकता है और जीवन अनुशासन के तत्व-रूप में न केवल यह अपनी शक्ति खो बैठता है , बल्कि समय के साथ विच्छिन्न होकर समाज से लुप्त भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में, धर्म को अगर वास्तव में कार्यशील होना है, तो उसे तर्क और विवेक पर आधारित होना चाहिये। इसका ही दूसरा नाम विज्ञान है। बौद्ध धम्म इस तत्व पर सम्पूर्ण सुसंगत है।

वैश्विक मूलभूत तत्वों का स्वीकार करना चाहिये

सामाजिक नैतिकता की संहिता के रूप में ठहरने के लिये धर्म को चाहिये की वह समता, स्वतंत्रता और बंधुता के बुनियादी तत्वों को मान्य करे। समाज जीवन के इन तीन तत्वों का स्वीकार किए बैगर कोई भी धर्म जिंदा नहीं रह सकता। बौद्ध धम्म के सम्पूर्ण शिक्षा का आधार इन मूलतत्व को अंगीकार करता है।

निर्धनता (गरीबी) का उदात्तीकरण नहीं करना चाहिये

धर्म में निर्धनता को पवित्रता नहीं माननी चाहिए अथवा उसका उदात्तीकरण नहीं करना चाहिए। धनवानों के लिये निर्धन बनाना चाहे संतोषदायी हो भी। परंतु निर्धनता कभी संतोषदायी नहीं होती। निर्धनता को संतोषकारी घोषित करना धर्म का विपर्यास है , बुराई और अपराध को बढ़ावा देना है तथा इस संसार को प्रत्यक्षता नर्क में धकेलना है। बौद्ध धम्म में गरीबी का उदात्तीकरण नहीं किया है। बौद्धधम्म का मार्ग सम्यक आजीविका द्वारा धन-संपति को प्राप्त करना चाहिए।

बाबा साहेब के अनुसार उपर्युक्त कसौटियां सिर्फ बौद्ध धम्म में ही पूर्ण हो सकती है। केवल बौद्ध धम्म ही ऐसा धम्म है जिसे नया जगत अपना सकता है। बुद्ध की तुलना में अन्य कोई ऐसे धर्म संस्थापक को खोजना कठिन होगा कि जिसकी शिक्षा लोगों के सामाजिक जीवन के इतने सारे पहलुओं को स्पर्श करती हो और जिसके सिद्धांत इतने आधुनिक हों और जिसका मुख्य उद्देश्य इसी धरती पर इसी जीवन में विमुक्ति दिलाना हो, न कि मृत्यु के बाद स्वर्ग का वादा करना।

बाबा साहेब स्वयं धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे।

आज दुनिया में , विशेषकर पश्चिम में , अनेक लोग बिना किसी धर्म के हैं। उनका उदाहरण बाबासाहेब ने क्यों नहीं अपनाया ? जब उन्होंने एक बार हिन्दू धर्म का त्याग कर दिया तब वे बिना किसी धर्म को ग्रहण किए क्यों नहीं रहे ? पहली बात है कि वे स्वयं धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। उन्होंने स्वयं धर्म की जरूरत महसूस की। दूसरी बात यह है कि समाज धरण के लिये नैतिकता के अर्थ में धर्म की अनिवार्य आवश्यकता में उनका विश्वास था। अंतत: बाबासाहेब का विश्वास था कि विश्व, को धर्म कि आवश्यकता है। इस नवीन विश्व , इस आधुनिक विश्व, इस 21वी शताब्दी के विश्व को प्राचीनकाल के विश्व की अपेक्षा धर्म कि बहुत ज्यादा जरूरत है। उनके अनुसार वह धर्म केवल बुद्ध का धम्म ही हो सकता है। वास्तव में बुद्ध की शिक्षा आत्यधिक आधुनिक है। बुद्ध का मुख्य चिंतन यह है कि मनुष्य इस जीवन में ही , इस धरती पर इसी छ फिट शरीर में ही निर्वाण को प्राप्त करे। उन्होंने मनुष्य को केवल मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में मुक्ति पाने का वचन नहीं दिया। बाबासाहेब ने हिन्दू धर्म का परित्याग करने के बाद बिना किसी धर्म वे वैसे ही नहीं रहे। उन्होंने देखा कि समाज को अपने अस्तित्व के लिये धर्म की अनिवार्य आवश्यकता है। पूरे विश्व के अभ्युदय के लिये धर्म की आवश्यकता है बशर्ते कि वह धर्म बौद्धधम्म ही हो।

बाबासाहेब धम्मक्रांति का भारत की अ-बौद्ध जनता, विशेषकर हिंदुओं पर परिणाम

भारत में बहुसंख्यक लोग हिन्दू हैं। बौद्ध तुलनात्मक दृष्टि से अल्पसंख्यक हैं। तथापि बाबासाहेब द्वारा उद्घटित समूहिक धम्म-क्रांति के आंदोलन का हिन्दू जाति पर गम्भीर प्रभाव

पड़ा है। उसने हिंदुओं को एक बहुत बड़ा धक्का दिया है , और उनमें से कुछ लोगों को बहुत गंभीरता से सोचने के लिये मजबूर किया है। इतना ही नहीं , बौद्ध धम्म में दीक्षित होने के पश्चात इन नव दीक्षित बौद्धों ने अपने को अस्पृश्य समझे जाने का धिक्कार कर दिया। उन्होंने मनुष्य जैसा व्यवहार किए जानेपर बल दिया। हिंदुओं को लाचार होकर कुछ हद तक ही सही उनके प्रति अपना रवैय्या बदलना पड़ा। कुछ हिन्दू अब यह मनाने लगे हैं कि जाति व्यवस्था एक अभिशाप है। अस्पृश्यता एक अभिशाप है , तथापि वे हिन्दू बने रहना और शास्त्रों में अपना विश्वास कायम रखना चाहते हैं। इसने उन्हें बहुत विपरीत परिस्थिति में डाल दिया है, क्योंकि कुछ हिन्दू शास्त्र जाति-व्यवस्था के पक्षपाती हैं और खासकर अस्पृश्यता के। तात्विक दृष्टि से यदि देखा जाय, तो ऐसा उदारमना हिंदुओं को चाहिये, कि वे उन शास्त्रों की अवहेलना करें तथा बौद्ध धम्म की दिशा में अग्रसर हों। अब उनमें से कुछ लोक धम्म को आचार में भी ला रहे है। सामुदायिक बौद्धधम्म परिवर्तन का आंदोलन सम्पूर्ण भारत के लिये इस प्रकार महत्व रखता है। हिन्दू जाति को प्रभावित करने के कारण सत्य ही हिंदुओं के लिये महत्वपूर्ण है। यह सम्पूर्ण भारत समाज को अधिक मानवीय और वास्तविक रूप में अधिक धर्मनिरपेक्ष बनाने में सहायक है।

बाबासाहेब की धम्मक्रांति का स्वयं बौद्ध धम्म पर परिणाम

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो बौद्ध धम्म बहुत प्राचीन धर्म है और अपने दो हजार पाँच सौ वर्षों के अवधि में वह अनेक उतार-चढ़ावों में से गुजरा है। कभी वह उन्नति के शिखर पर रहा है और कभी अवनति की गहरी खाई में। वस्तुत: धम्म 'अकालिकों' अर्थात काल-बन्धन से मुक्त होने से अवनत नहीं हुआ। किन्तु बौद्ध धर्म का सामाजिक-धार्मिक स्वरूप समय समय पर अवश्य पतन को प्राप्त हुआ। छ: या सात सौ वर्ष पूर्व , बौद्ध धम्म भारत से प्राय: लुप्त हो गया था और यह उसके स्वयं के लिये ही केवल एक जबरदस्त धक्का नहीं था, वरन उसके देश के लिये भी था जहाँ उसका जन्म हुआ। वास्तव में, यह स्वीकार करना होगा , कि बुद्ध धम्म कुछ सौ वर्षों से अवनति की ओर गतिमान रहा है। परंतु वर्तमान शताब्दी में तो यह गति अधिक तीव्र सी हो गई थी। फिलहाल दिनीय के दो भागों में बौद्ध धम्म सचमुच ही उन्नति के पथ पर है। ये है, पश्चिम में विशेषकर इंग्लैंड और भारत में विशेषकर महाराष्ट्र। स्वाभाविक ही है , कि महाराष्ट्र की प्रगति इंग्लैंड की प्रगति से काफी ज्यादा है। यह स्तुत्य है, कि यहाँ महाराष्ट्र में सामुदायिक धम्म परिवर्तन के आंदोलन के कारण , जिसका उदघाटन बाबासाहेब ने किया , इन कुछ वर्षों में लाखों व्यक्ति बौद्ध बन चुके हैं। इस तथ्य का केवल भारत के लिये ही नहीं , अपितु सम्पूर्ण बौद्ध जगत के लिये महत्व है। इस तथ्य का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि बौद्ध धम्म का भारत में छ: या सात सौ वर्षो के पश्चात पुनर्जागरण हुआ है। अब बौद्ध धम्म विकास की ओर पुन: उन्मुख हो गया है। इसीलिए बौद्ध धम्म में धम्मक्रांति का आंदोलन जिसका उदघाटन बाबासाहेब ने किया, केवल बौद्धधम्म के लिये ही महत्व नहीं है , अपितु, समस्त बौद्ध जगत के लिये भी उसका महत्व है। यह एक महान युग प्रवर्तक घडी है। ऐसी घडी-जहाँ से बौद्ध पुन:विकास की दिशा की ओर उन्मुख हुआ, जहाँ से उसने अपने ऐतिहासिक अस्तित्व में एक नये रूप को धरण किया। ऐसा रूप जो अतीत के किसी रूप से अधिक प्रेरणादायी हो सकता है।

बाबासाहेब के धम्मक्रांति का विश्वव्यापी परिणाम

सामूहिक रीति से बौद्ध धम्म को स्वीकृति का आंदोलन, जिसका उदघाटन बाबासाहेब ने किया था, संकीर्ण अर्थ में केवल धर्म परिवर्तन का आंदोलन नहीं था। याने के , एक धर्म को छोड़ कर दूसरे धर्म में विश्वास रखने तक ही सीमित नहीं था। इसके विपरीत वह जीवन के सभी पहलुओं में , चाहे वे धार्मिक , संस्कृतिक , शैक्षणिक, वैचारिक , सामाजिक , राजनैतिक या

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आर्थिक हो, आमूल परिवर्तन का प्रतिनि धि था। यह सर्वव्यापी प्रगति का सर्वव्यापी विकास का प्रतिनिधि था। इसलिये इसे हम केवल बाबासाहेब का बौद्ध धम्म के स्वीकार का आंदोलन नहीं कहते, किन्तु, इसे हम बाबासाहेब की धम्मक्रांति कहते हैं। आज संसार के अनेक भागों में लोक अपने जीवन के सभी अंगों में अधिक हितकारक परिवर्तन चाहते हैं किन्तु उस ओर बढ़ने के लिये उन्हे ठीक रास्ते का पता नहीं है। कुछ लोग हिंसा के जरिये परिवर्तन लना चाहते हैं, कुछ धन-संपति द्वारा या विज्ञान और तकनीक द्वारा और फिर शिक्षा द्वारा परिवर्तन लाना चाहते है। किन्तु उन्हें ठीक सफलता नहीं मिलती है। कभी-कभी तो उन्हें सफलता मिलती ही नहीं, और वे हालत की बेहालत कर डालते हैं। बाबासाहेब की धम्मक्रांति का आंदोलन संसार के सामने एक ऐसी क्रांति का उदाहरण प्रस्तुत करता है , जो क्रांति वास्तव में सफल हुई है। यह आन्दोलन एक धम्मक्रांति का उदाहरण है- ऐसे क्रांति का जो शांतिपूर्ण तरीके से की गई है। अर्थात बहुत प्रमाण में, लाखों लोगों के जीवन को शांतिपूर्ण तरीके से धम्म के द्वारा पूरी तरह बदल देने में, वह सफल रही है। इस प्रकार सामुदायिक धम्म परिवर्तन का आंदोलन , जिसका उदघाटन बाबासाहेब ने किया था , समस्त विश्व के लिये बहुत ही बड़ा महत्व रखता है। वह सारे विश को सही दिशा दिखलाता है।

धम्मक्रांति कार्य के लिये उचित मार्ग की अवश्यकता:

हम अभी तक कार्य करने के लिये उचित मार्ग नहीं ढूंढ सके हैं। इसका मतलब होता है कि हम अब तक कार्य करने का कोई नया रास्ता नहीं ढूंढ सके है। हम अभी भी लकीर के फकीर बने रहे है। बाबासाहेब द्वारा लाया गया परिवर्तन एक धम्म-परिवर्तन था, एक धम्मक्रांति थी और हम धम्म के कार्य तभी कर सकते हैं, जब हम धम्म के अनुरूप साधनों को अपनाते हैं। यहाँ सांसारिक अनुभव- राजनैतिक अनुभव किसी काम के नहीं हैं। धम्मक्रांति के लिये हम तभी कार्य कर सकते है जब हम धम्म को समझें , धम्म का आचरण करें, उस क्रांति के हम स्वयं पुर्जे बने और उसे अपने जीवन में ढाल लें। दूसरे शब्दों में हम धम्मक्रांति के लिये तभी करी कर सकते है, जब धम्म परिवर्तन के पश्चात हमने स्वयं अपने को बदल डाला हो, हम उसके लिये तभी कार्य कर सकते हैं जब हम में, आमूल परिवर्तन हो जाय। हमारे जीवन के सभी पहलू क्रांतिमय हो जाएँ। तभी जब हम अपने ही 'पुनर्जन्म' का अनुभव करें और एक नई जिन्दगी जीयें। केवल त्रिशरण और पंचशील दुहरा और अपने को बाबासाहेब का सच्चा अनुयायी बतलाना पर्याप्त नहीं है। दूसरे शब्दों में, धम्मक्रांति के लिये हमें न केवल एक नाय मार्ग की तलाश ही करनी है, वरन हमे नाय प्रकार के बौद्ध सेवकों भी ढूँढने है। बाबासाहेब ने इस बात को भली-भाँति समझ लिया था और इसी कारण उन्होने कहा था कि वर्तमान परिस्थितियों में जो भिक्षुसंघ है वह बौद्ध धम्म के प्रचार के लिए अयोग्य हैं। बाबासाहेब ने जो कहा उसका मतलब है, कि हमें एक नए प्रकार के भिक्षु अथवा धम्म-सेवक की आवश्यकता है।

आदर्श धम्म-सेवक एवं त्रिरत्न बौद्ध महासंघ:

यह कोई जरूरी नहीं है कि इस नये प्रकार के बौद्ध प्रचारक को भिक्षु ही कहा जाये। वह कुछ भी कहलाया जा सकता है। वह चाहे जो भी कहलाया जाये, उसे 100 प्रतिशत बौद्ध होना चाहिये 75 प्रतिशत बौद्ध और 25 प्रतिशत हिन्दू नहीं। इसका अर्थ है कि उसे एक बौद्ध के समान सोचना चाहिये, बौद्ध के समान बोलना चाहिये , बौद्ध के समान रहना चाहिये। नये प्रकार के बौद्ध प्रचारक को चाहिये कि वह स्वयं को इन तीन रत्नों को समर्पित कर दे। ये तीन रत्न उसके जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण हों। उसके नौकरी/धंधे से भी आधी, पत्नी और परिवार से भी अधिक, सांसारिक सफलताओं से भी अधिक, सुख-सुविधाओं से भी अधिक-अपितु अपने जीवन से भी अधिक महत्व के हों। अत: जहाँ तक हो सके यह नए प्रकार का बौद्ध प्रचारक पूरे समय का कार्यकर्ता हो। धम्मक्रांति के लिये वह अपना

सारा समय और शक्ति लगा दे। यह नए प्रकार का बौद्ध धम्म प्रचारक धम्म का भली प्रकार ज्ञाता हो और धम्म का आचरण करनेवाला हो। वह शीलों का पालन करे , दस कुशल धर्मों का और ध्यान-साधना का अभ्यास करे। आवश्यकता पड़ने पर वह अपने दोनों हाथों से कठिन परिश्रम करे। उसे स्वयं को एक आदर्श प्रस्तुत करना होगा और सबसे बड़ी बात यह है , कि इस नये प्रकार के बौद्ध कार्यकर्ता को धम्मक्रांति के लिये धम्म के अनुरूप ही कार्य करना होगा। वह मैत्री , करुणा, और प्रज्ञा के रास्ते इस धम्मक्रांति के लिये कार्य करेगा। इसके अलावा यह नये प्रकार का बौद्ध कार्यकर्ता ये नये प्रकार का बौद्ध धम्म कार्यकर्ता, साथ में सहयोग से कार्य करेंगे और कार्यकर्ता गण संघ बनेगा। वस्तुत: वह एक महासंघ या महान आध्यात्मिक समाज बनकर जो केवल भारत में ही नहीं, वरन अनेक देशों में पूरे विश्व में कार्य करेगा। वह सभी प्राणियों के सुख और सुविधा के लिये कार्य करेगा।

निष्कर्ष

13 ओक्टोबर, 1935 में धर्मांतर की घोषणा के बाद 21 वर्ष लगातार बाबासाहेब ने विश्व के सभी धर्मो का अध्ययन किया। 1956 तक आते-आते उन्होंने यह समझ लिया था कि बौद्ध धम्म ही सर्वोत्तम धम्म है जो संसार को विनाश और पतन से बचा सकता है। इसके लिये बौद्ध धम्म में जो अनेक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास तथा समय के प्रवाह के साथ दोष समा गए थे और वे धम्म के अंग माने जाने लगे थे, उन्हें दूर करना आवश्यक था। बौद्ध भिक्षुओं की कमी थी। धर्मांतर के पूर्व बाबासाहेब सुदृढ़ पृष्ठभूमि तैयार करने में लगे हुए थे। उन्होंने बौद्ध के लिये जिस ग्रंथ रत्नाकर “दि बुद्ध अँड हिज धम्म” (बौद्ध और उनका धम्म) का लेखन कार्य नवंबर 1954 में प्रारम्भ किया था वह 1956 के आरंभ में ही पूरा हो पाया। यद्यपि उसकी भूमिका को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका था। वे इस ग्रंथ को बौद्ध धम्म को एकाकी पूर्ण ग्रंथ बनाना चाहते थे जिसमें वे सफल भी हुए। इस पूरे ग्रंथ को पढ़कर को भी व्यक्ति बुद्ध और उनके धम्म से भली-भांति परिचित हो सकता है और उस पर चलकर अपना जीवन सुखी बना सकता है। इस ग्रंथ के सार को ग्रहण करते हुए हम सब मिलकर इस धम्मक्रांति को मन-मन में, घर-घर में और सम्पूर्ण समाज व भारत देश में प्रचार-प्रसार करना ही बाबासाहेब कि 125वी जन्म जयन्ती का महोत्सव का परम उद्देश्य होगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1 महास्थविर संघरक्षित, डॉ. आंबेडकर की धम्म क्रांति, जंबूद्वीप ट्रस्ट, पुणे, 1999.

2 बोधिसत्व डॉ. भीम राव आंबेडकर, बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य, CBBEF, Taiwan, 2006.

3 बोधिसत्व डॉ. भीम राव आंबेडकर, बुद्ध और उनका धम्म, CBBEF, ताइवान, 2010.

4 डॉ. अँगने लाल, बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर जीवन और दर्शन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.